मुझे कुछ और बताओ

क्रॉसबी

“मैं जानता हूँ एक ऐसी जगह,”
एंड्रू ने कहा टिम से,
“अगर मैं बताऊँ तुम्हें तो
क्या मेरी बात का करोगे विश्वास?”

“मैं करूंगा विश्वास तुम्हारा,” टिम बोला,
“मैं करूंगा विश्वास तुम्हारा,
बताओ मुझे और देखो ज़रा.”

“मैं जानता हूँ एक ऐसी जगह,” एंड्रू बोला,
“जहां मैं उठा सकता हूँ
एक हाथी बाहों में अपनी.”

“सूंड समेत, सारा का सारा?” टिम बोला.
“हाँ, सूंड समेत, सारा का सारा,” बोला एंड्रू.

“और थाम सकता हूँ
मैं एक ऊँट अपने एक हाथ में.
अगर लगा दूँ अपने दोनों हाथ
तो पकड़ सकता हूँ दो ऊँट.
शायद तीन भी.”

टिम बोला, “तीन ऊँट दो हाथों में?”
एंड्रू बोला, “हाँ, सच में.”
“मुझे कुछ और बताओ,” बोला टिम.

“इस जगह मैं थपथपा सकता हूँ
एक शेर को,” बोला एंड्रू.
“उसकी नाक पर?” पूछा टिम ने.

“हाँ, उसकी नाक पर,” एंड्रू बोला,
“और चाहूँ तो खुजला दूँ उसका कान.”

“वह तुम्हें काटेगा नहीं?” टिम ने पूछा.

“अरे नहीं,” बोला एंड्रू,
“कभी नहीं काटेगा मुझे.”
“मुझे कुछ और बताओ,” बोला टिम.

“इस जगह एक सील मछली को
गुदगुदा सकता हूँ मैं,” एंड्रू ने कहा.
“ले जा सकता हूँ सील को अपने घर
और उस सील को रख सकता हूँ
अपने पिता की कुर्सी पर.”
“अपने पिता की गोद में भी?” पूछा टिम ने.
“शायद हाँ,” एंड्रू बोला.
“मुझे कुछ और बताओ,” बोला टिम.

“इस जगह,” एंड्रू बोला,
“मैं हो सकता हूँ
एक वृक्ष से ऊँचा,
एक जहाज़ से बड़ा,
एक व्हेल से भी विशाल.”
“क्या भालू से ज़्यादा मोटे हो सकते हो?”
पूछा टिम ने.
“इस जगह मैं हो सकता हूँ,” एंड्रू बोला.
“मुझे कुछ और बताओ,” बोला टिम.

“इस जगह,” कहा एंड्रू ने
“मैं उठा सकता हूँ एक नदी,
पर भीगूँगा नहीं मैं फिर भी.”
“क्या उस नदी में है कोई मछली?”
पूछा टिम ने.

“शायद है,” एंड्रू बोला.
“शायद नदी में है एक नाव भी.
और नाव में है एक आदमी भी.
और लहरों पर बैठी है एक मुर्गाबी.”
“मुझे कुछ और बताओ,” बोला टिम.

“इस जगह हैं,” बोला एंड्रू,
“ऊंचे पहाड़ और कई फव्वारे,
और कई चाँद और चम्मच ढेर सारे,
और कई राजा और रानियाँ,
और कई घड़ियाँ और छड़ियाँ,
और कई कुर्सियां और सीढ़ियाँ,
और कई जुराबें और अंगूठियां,
और कई सूअर और मुर्गियां,
और कई कलम और तलवारें,
और कई ट्रक और कारें,
और बहुत सारे,
बहुत सारे झबरीले कुत्ते.”

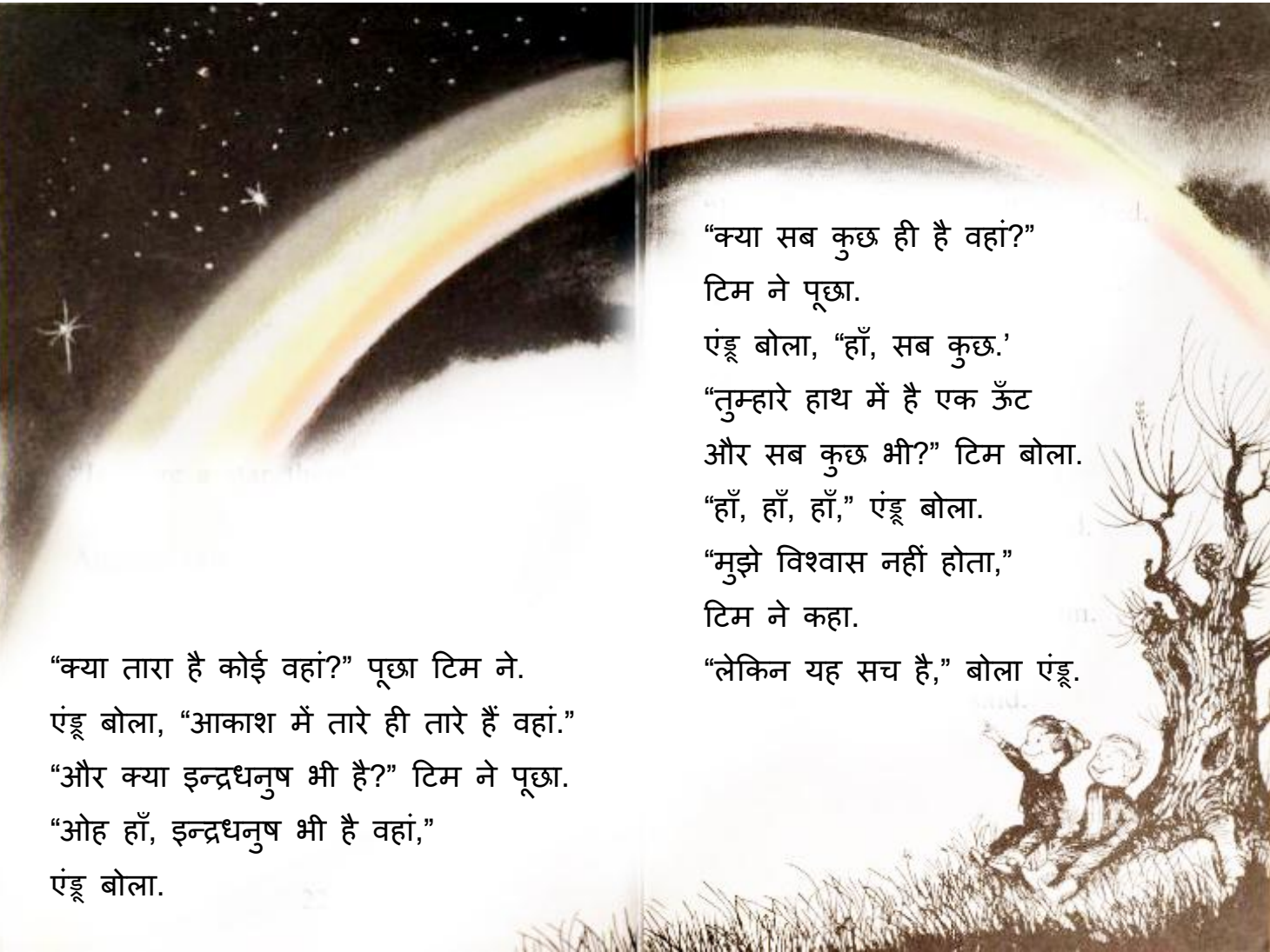

"क्या तारा है कोई वहां?" पूछा टिम ने.
एंड्रू बोला, "आकाश में तारे ही तारे हैं वहां."
"और क्या इन्द्रधनुष भी है?" टिम ने पूछा.
"ओह हाँ, इन्द्रधनुष भी है वहां,"
एंड्रू बोला.

"क्या सब कुछ ही है वहां?"
टिम ने पूछा.
एंड्रू बोला, "हाँ, सब कुछ.'
"तुम्हारे हाथ में है एक ऊँट
और सब कुछ भी?" टिम बोला.
"हाँ, हाँ, हाँ," एंड्रू बोला.
"मुझे विश्वास नहीं होता,"
टिम ने कहा.
"लेकिन यह सच है," बोला एंड्रू.

“क्या यह सब देखा तुम ने
अपनी दोनों आँखों से,” पूछा टिम ने.

“हाँ, अपनी दोनों आँखों से,” बोला एंड्रू.

“कहाँ,” बोला टिम.

एंड्रू बोला, “मैं न बताऊँगा तुम्हें,
न होगा विश्वास तुम्हें.”

“मैं करूंगा विश्वास तुम्हारा,” बोला टिम.
“मैं करूंगा विश्वास तुम्हारा.
बताओ मुझे और देखो तो ज़रा.”

“नहीं,” एंड्रू ने कहा, “मैं दिखाऊँगा तुम्हें.
मैं ले जाऊँगा उस जगह तुम्हें.”

टिम आया एंड्रू के पीछे.
एक मोड़ के बाद,
सड़क के उस पार,
कैंडी स्टोर से आगे,
सीढ़ियों के ऊपर,
एक दरवाज़ा किया पार,

एक शांत, बड़े कमरे के अंदर आये.
एक शांत और बड़ा कमरा
जिसकी हर दीवार
के साथ लगी थी
किताबों की कतार-पर-कतार.
“क्या यही जगह है?” टिम ने पूछा.
“यही जगह है,” एंड्रू बोला.
“ऊँट कहां है?” पूछा टिम ने.
एंड्रू बोला, “यहीं है.”
“मैं ढूंढता हूँ उसे,” टिम ने कहा.

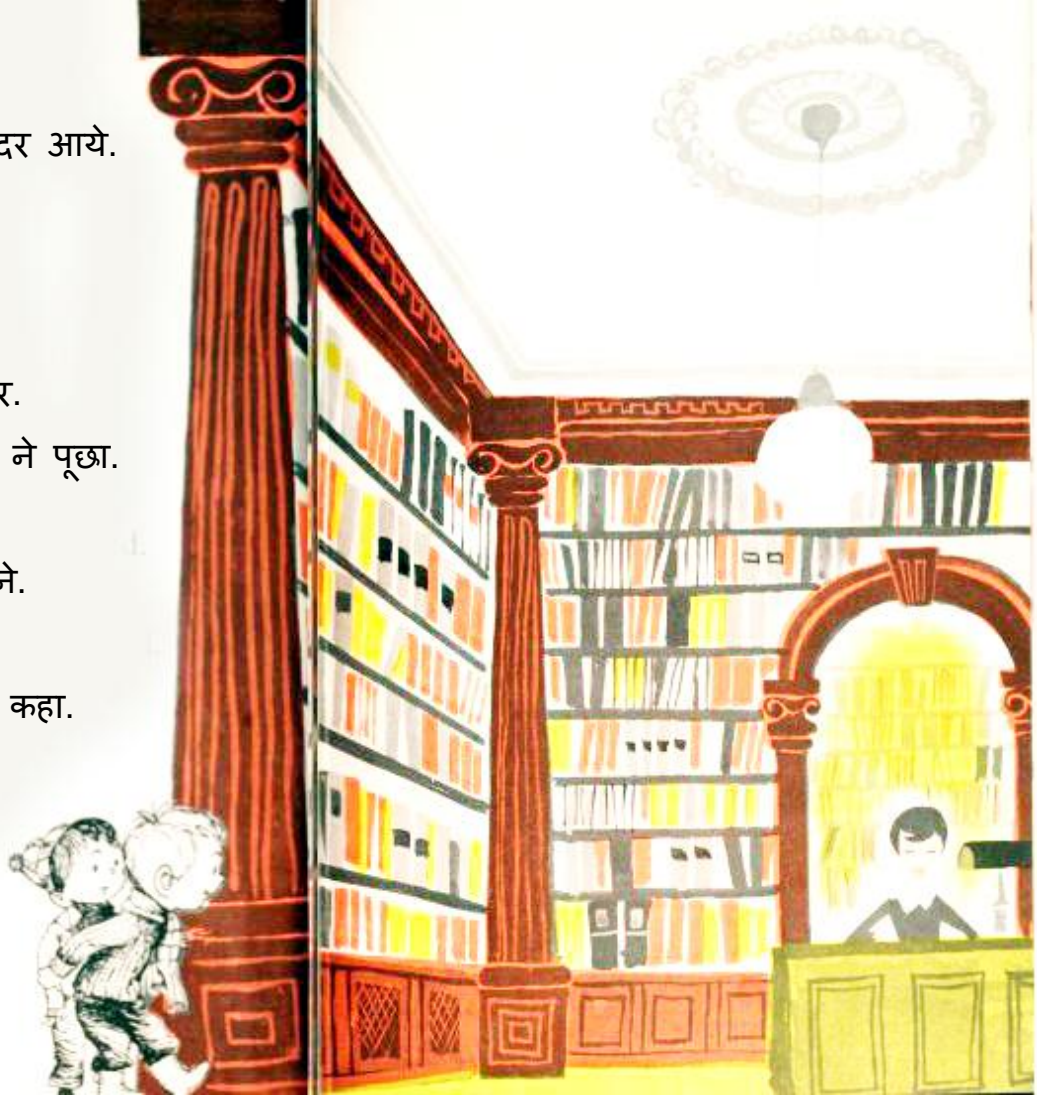

लेकिन वह अलमारी में न था.
वह दराज में न था,
वह दवात में न था.
वह फर्श पर न था,
क्या वह डेस्क के नीचे था?
क्या मेज़ के ऊपर था?
क्या दरवाज़े के पीछे था?
क्या किसी लेबल पर चिपका था?
नहीं.

टिम ने कमरे में देखा हर जगह.
“मैं जानता हूँ,” वह चिल्लाया
एंड्रू ने कहा, “चु.....प”
“लेकिन मैं जानता हूँ ऊँट कहाँ है,”
टिम ने फुसफुसा कर कहा.
“दिखाओ मुझे,” बोला एंड्रू.

टिम चल दिया.
एंड्रू ने इंतज़ार किया.

एक मिनट में टिम लौट आया.
टिम लौट आया
और लौटकर एक ऊँट
एंड्रू के हाथ में थमाया.
“देखो,” बोला टिम “मैंने कहा था
मैं ढूंढ लूंगा ऊँट.
देखो, मैंने ढूंढ लिया है ऊँट
यहाँ इस किताब में.
यही थी वह अकेली जगह
जहां मिल सकता था ऊँट.”

एंड्रू ने टिम को लौटा दी किताब.
वह थी एक बड़ी किताब.
किताब में थीं तस्वीरें ऊँट की.
और कहानियाँ भी थीं ऊँट की.
“देखो,” टिम बोला, “अपने हाथ में
मैंने पकड़े हैं कई ऊँट.”

“यही कहा था न मैंने तुमसे?” एंड्रू बोला.

“सोचता हूँ मैं घर ले जाऊं,” टिम बोला,
“एक राकेट,
और भाप से चलने वाला एक बेलचा,
और एक जिराफ़”.
टिम ने उठा ली एक किताब.
उसने एक और उठा ली किताब.
फिर एक और किताब.
और घर जाने के लिए था अब वह तैयार.

एंड्रू ने कहा, “रुको बस पल भर.
एक किताब मैं भी ले जाऊँगा
अपने घर.”

टिम ने किया इंतज़ार.
फिर एंड्रू और टिम चले वापस.
दरवाज़ा किया पार,
सीढ़ियों से उतरे नीचे,
कैंडी स्टोर के आगे,

सड़क के पार,
एक मोड़ के बाद.
एंड्रू और टिम,
एक राकेट,
भाप से चलने वाला एक बेलचा,
और एक जिराफ.
और एंड्रू ने थाम रखा था
बांह के नीचे एक हाथी.

“ध्यान रखना,” बोला टिम,
“जिराफ कहीं गर्दन बाहर न निकाल दे.
रास्ते पर रुक जायेंगी सारी कारें.
यहाँ से लेकर पहाड़ तक.
वो रोक देगा सारी कारें,
एक के बाद एक.
फिर घर जाने में लग जाएगा
हमें पूरा दिन एक.”

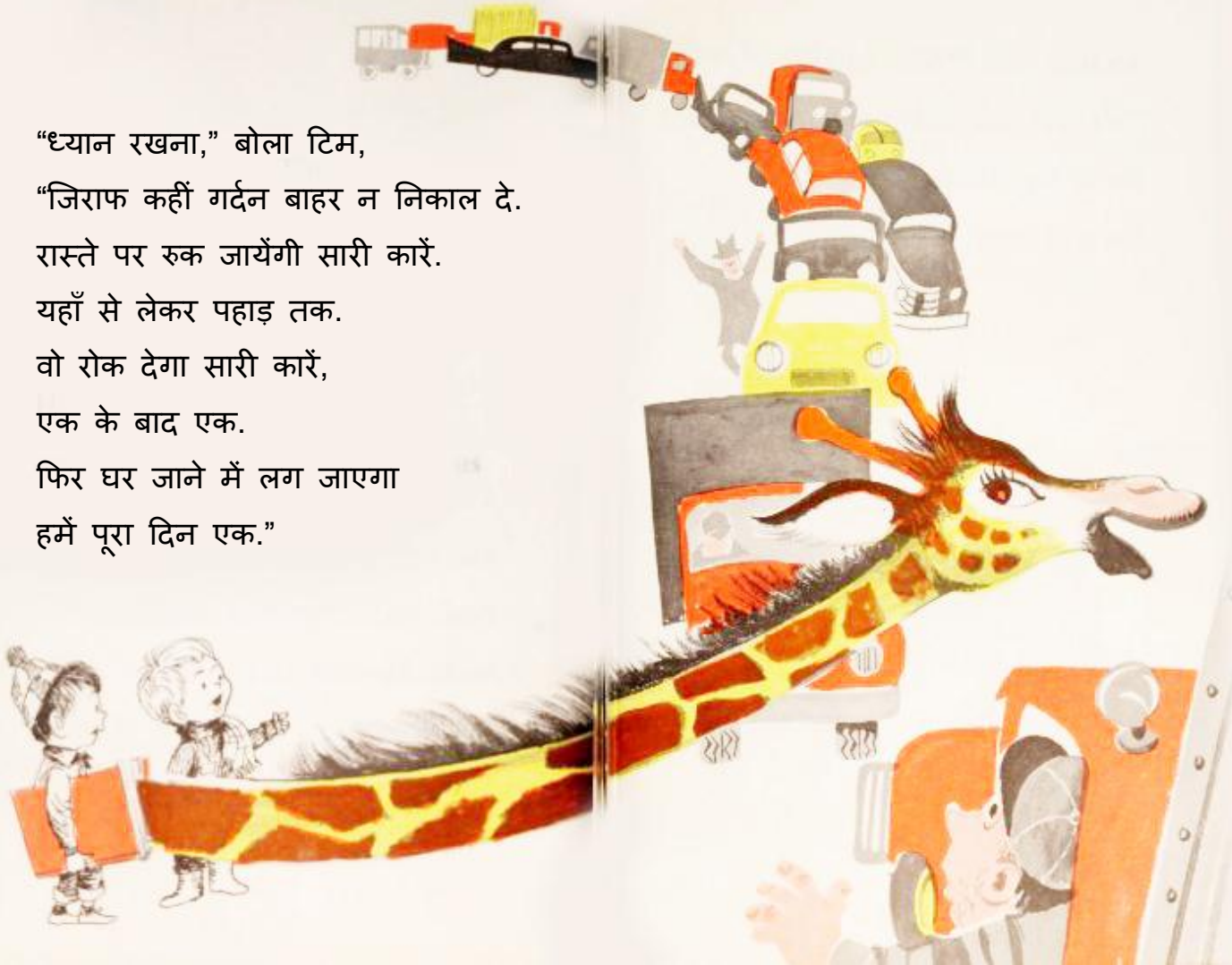

एंड्रू बोला, “किसे है परवाह?”
“हम जायेंगे घर हाथी पर होकर सवार.
वो है ताकतवर. वो है विशाल.
हम जायेंगे उस पर होकर सवार.”

“क्या वो उठा पायेगा एक राकेट,
भाप से चलने वाला बेलचा, और मुझे?”
पूछा टिम ने.
“अवश्य,” बोला एंड्रू,
“यह सब भी और एक जिराफ भी.”

टिम ने कहा, “या अपने राकेट पर बैठकर
जा सकता हूँ अपने घर उड़ कर.
राकेट को उतारूंगा
घर के पीछे, अहाते में.
ओह! माँ मेरी होगी कितनी हैरान!
माँ कहेगी, ‘टिमोथी राकेट को उठाओ
यहाँ इस अहाते से.
बिगाड़ दिया है सारा बग़ीचा मेरा.
टिमोथी, सुना तुमने?’
ऐसा कहेगी माँ मेरी.”

एंड्रू बोला, “अगर हाथी पर होकर सवार,
मैं गया अपने घर तो माँ कहेगी,
‘यह घर इतना बड़ा नहीं कि रह सकें
हम सब भी और यह हाथी भी.
इसे रखना होगा घर के बाहर,
बाहर! बाहर!
चलो, हाथी के साथ जाओ बाहर!
फिर मैं क्या करूंगा?”
पूछा एंड्रू ने.

“हम बनाएंगे एक पिंजरा
अहाते के अंदर,” टिम बोला,
“अहाते के इधर तुम्हारा घर,
और अहाते के उधर मेरा घर.”

और एंड्रू बोला,
“फिर भाप से चलने वाले बेलचे से
हम उठा लेंगे
राकेट
और हाथी
और जिराफ
और रख देंगे पिंजरे के अंदर.
मेरी माँ को न लगेगा बुरा तब.”
“मेरी माँ को तो लगेगा,” बोला टिम.

“चलो, हम घर पहुँच गये,” बोला एंड्रू.
वह रुका फाटक के पास.
“अब करोगे मेरी बात का विश्वास?”
बोला एंड्रू.

“विश्वास किस बात का?” बोला टिम .
“तुम जानते हो किस बात का,” बोला एंड्रू.
वह गया घर अपने.
टिम भी चला घर अपने.

घर के बाहर बैठी थी टैन्ज़ी
टिम की बहन थी टैन्ज़ी.
उसने छिपा लीं किताबें
अपनी पीठ के पीछे.

“बताओ तो भला
मेरे हाथों में है क्या?” उसने कहा.
“ब्रेड और जेली सैंडविच,” टैन्ज़ी बोली.
“दुबारा बताओ,” टिम बोला.
“एक झींगुर,” टैन्ज़ी बोली.

टिम बोला, “तुम कभी बता न पाओगी.
मेरे हाथों में हैं एक राकेट,
भाप से चलने वाला एक बेलचा
और एक जिराफ.”

“ओह, ऊंह,”बोली टैन्ज़ी.
“पर यह है सच,” बोला टिम.

फिर बैठ गया वह टैन्ज़ी के पास.
“मैं जानता हूँ ऐसी एक जगह,”
टिम ने कहा टैन्ज़ी से,
“अगर मैं बताऊँ तो क्या
करोगी मेरी बात का विश्वास.”
“मैं करूंगी विश्वास,” बोली टैन्ज़ी.
“बताओ मुझे और देखो ज़रा.”
“मैं जानता हूँ ऐसी जगह
जहां थाम सकता हूँ मैं
अपनी बांह के नीचे एक हाथी.”
“सूंड समेत, सारा-का-सारा?” पूछा टैन्ज़ी ने.
“हाँ, सूंड समेत, सारा-का-सारा,” बोला टिम.

“मुझे कुछ और बताओ,” टैन्ज़ी बोली.

“नहीं,” बोला टिम.
“तुम करोगी न विश्वास मेरा.”
“बताओ मुझे और देखो ज़रा.”

“नहीं,” बोला टिम, “मैं दिखाऊँगा तुम्हें
मैं ले जाऊँगा वहां तुम्हें.”

अंत